RNI 26281/74 रजि.नं. पी.बी./जे.एल.-011/2018-20

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 45, अंक : 22 एक प्रति 2 : रुपये

कुल पृष्ठ : 8

रविवार 23 अगस्त, 2020

विक्रमी सम्वत् 2077, सृष्टि सम्वत् 1960853121

दयानन्दाब्द : 196 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–45, अंक : 22, 20-23 अगस्त 2020 तदनुसार 8 भद्रपद, सम्वत् 2077 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

नेता बनने के साधन

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता यत्रा नियुद्भिः सचसे शिवाभिः।
दिवि मूर्धानं दधिषे स्वर्षां जिह्वामग्ने चकृषे हव्यवाहम्।।

-यजुः० १५।२३

शब्दार्थ-तू **यज्ञस्य** = यज्ञ का **च** = तथा **रजसः** = संसार का **नेता** = नेता **भुवः** = होगा, **यत्र** = जब तू **शिवाभिः** = कल्याणमयी **नियुद्भिः** = नीतियों से **सचसे** = संयुक्त होगा। **मूर्धानम्** = सिर को **दिवि** = द्यौ में, प्रकाश में **दधिषे** = धारण करेगा और **स्वर्षाम्** = उत्तमगतिवाली, मधुर **जिह्वाम्** = जिह्वा को **हव्यवाहम्** = भोग प्राप्त कराने वाली **चकृषे** = करेगा।

व्याख्या-इस मन्त्र में नेता बनने के निम्न उपाय बताये गये हैं-

१. **'यत्रा नियुद्भिः सचसे शिवाभिः'** = जब कल्याणकारी नीतियों, युक्तियों से युक्त होगा। नेता बनने के अभिलाषी को पहले अपना व्यवहार सँवारना चाहिए। उसका व्यवहार ऐसा हो, जिससे सबका भला हो। भाव यह है कि उसे सदा अपने अनुगतों की प्रत्येक आवश्यकता तथा उसकी पूर्त्ति के साधन ज्ञात होने चाहिएँ।

२. **'दिवि दधिषे मूर्धानम्'** = सिर आसमान पर रखे। इसका यह भाव नहीं कि वह अभिमान करे, प्रत्युत यह कि अपने ज्ञानादि गुणों के कारण वह सबसे ऊँचा हो। यदि नेता योग्यता में कम हुआ तो उसका नेतृत्व चल नहीं सकेगा। वह आसमान में सिर तभी रख सकेगा, जब उसे [सिर को] ज्ञानी गुरुओं के चरणों में रखने का अभ्यस्त होगा।

३. **'स्वर्षां जिह्वामग्ने चकृषे हव्यवाहम्'** = अपनी मधुर वाणी को भोग प्राप्त कराने वाली बनाये। वाणी की मिठास सबसे आवश्यक है और सबके लिए आवश्यक है। नेता के लिए तो कहना ही क्या है! मनुजी ने कहा है-

अहिंसयैव भूतानां कार्यं श्रेयोऽनुशासनम्।
वाक् चैव मधुरा श्लक्ष्णा प्रयोज्या धर्ममिच्छता।।

-२।१५९

धर्माभिलाषी को प्राणियों का अनुशासन अहिंसापूर्वक ही करना चाहिए और वाणी मधुर तथा श्लक्ष्ण-सुथरी ही प्रयोग करनी चाहिए। केवल मीठी और चिकनी-चुपड़ी बातों से ही दूसरे को नहीं टाल देना चाहिए, प्रत्युत वह स्वर्षा=मधुर या सुखदायी वाणी, 'हव्यवाट्' भी होनी चाहिए। नीतिकार कह गये हैं-**'निरत्ययं साम न दानवर्जितम्'** = निर्बाध सान्त्वना दान के बिना व्यर्थ है, अर्थात् जहाँ मीठी-मीठी बातें बनाओ, वहाँ वास्तव में भी कुछ करके दिखाओ। ऋग्वेद [१०।३८।४] में 'रक्षक' के सम्बन्ध में कुछ ऐसे ही भाव हैं-

यो दभ्रेभिर्हव्यो यश्च भूरिभिर्यो अभीके वरिवोवित्नुषाह्यो।
तं विखादे सस्त्रिमद्य श्रुतं नरमर्वाञ्चमिन्द्रमवसे करामहे।।

जिसे छोटे बुला सकें, बड़े बुला सकें, जो दूरस्थ, मनुष्य से सहन योग्य कार्य में विधान का ज्ञान रखता हो, विपत्ति के समय ऐसे अतिशय शुद्ध विद्वान्, सरल, ऐश्वर्यसम्पन्न नेता को हम रक्षा के लिए नियुक्त करते हैं।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

-उ० ९.३.९

भावार्थ-सबसे बढ़कर यशस्वी, सर्वज्ञ, सबका पालक इन्द्र, भक्तों के दुःखों को काटने वाला, जानने योग्य, सूर्यादि सब बड़े-बड़े पदार्थों का जनक और हम सबके कल्याण के लिए वेदों का उत्पादक परमात्मा हम सबका कल्याण करे।

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे।।

-अथर्व० १.१.१

भावार्थ-हे वेद वाणी के पालक और मालिक परमात्मन्! मेरे शरीर में ५ महाभूत, ५ प्राण, ५ ज्ञानेन्द्रियां, ५ कर्मेन्द्रियां, १ अन्तःकरण ये इक्कीस दिव्य शक्तिवाले देव वर्त्तमान हैं, जो कि सब शरीरों में सब आकार और रूपों को धारण करने वाले हैं, आप कृपा करके इन सबके बल को मेरे लिए धारण करें, जिससे मैं आपका सेवक, आत्मिक शारीरिक आदि बलयुक्त होकर, आपकी वैदिक आज्ञा का पालन करता हुआ, मोक्ष आदि उत्तम सुख का भागी बनूं।

पुनरेहि वाचस्पते देवेन मनसा सह।
वसोष्पते नि रमय मय्येवास्तु मयि श्रुतम्।।

-अथर्व० १.१.२

भावार्थ-हे वाचस्पते! धनपते! आप हम सब पर कृपा करो, जो-जो हमें वाञ्छित फल हैं दान करो, हमारे हृदय में सदा अभिव्यक्त होकर हमें आनन्द में मग्न करो। जैसे कृपालु पिता अपने प्यारे बालक को वाञ्छित फल-फूल देकर क्रीड़ा कराता हुआ प्रसन्न रखता है। ऐसे ही आप हमें अभिलषित फल देकर, हमारी यह प्रार्थना अवश्य स्वीकार करें कि, जो वेद, शास्त्र और महात्माओं के सदुपदेशों को हम सुनें वे कभी विस्मरण न हों।

यो जात एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान् क्रतुना पर्यभूषत्।
यस्य शुष्माद् रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः।।

-अथर्व० २०.३४.१

भावार्थ-जिस अनादि सर्वशक्तिमान् परमात्मा ने अपने अनन्त ज्ञान और बल से सूर्य चन्द्रादि दिव्य देवों को रचा, सजाया और उन सबको अपने-अपने नियम में रखा है, वह इन्द्र है।

वेद एवं पर्यावरण

ले.-शिवनारायण उपाध्याय दादावाड़ी कोटाह्य, (राजस्थान)

तैत्तिरीयोपनिषद ब्रह्मानन्द वल्ली अनुवाक प्रथम में सृष्टि की उत्पत्ति का क्रम इस प्रकार बताया गया है, 'तस्माद्वा एतस्मादात्मन् आकाश: सम्भूत:। आकाशाद्वायु:। वायोरग्नि: अग्नेराप:। अद्भ्य: पृथिवी। पृथिव्या ओषधय:। ओषधीभ्योऽन्नम्। अन्नाद् रेत:। रेतस: पुरूष। स वा एष पुरूषोऽन्नरसमय:। अर्थात् उस परमात्मा से आकाश उत्पन्न हुआ, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथिवी, पृथ्वी से अन्नादि औषधियां, औषधियों से वीर्य और वीर्य से पुरूष उत्पन्न हुआ इसलिए पुरूष अन्न रसमय है।

अब पर्यावरण का अर्थ है चारों ओर से ढका हुआ। हम पृथ्वी पर रहते हैं और आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी तथा पृथ्वी पर स्थित औषधियों, पेड़ पौधों और पशु पक्षियों से घिरे हुए हैं। इनमें सन्तुलन बनाए रखना पर्यावरण शुद्धता तथा असन्तुलन बना देना पर्यावरण प्रदूषण कहलाता है। वेदों में पर्यावरण में सन्तुलन बनाए रखने से सम्बन्धित सैकड़ों मंत्र है। इस लेख में हम वेदों के मंत्रों के आधार पर पर्यावरण पर चर्चा कर रहे हैं।

पर्यावरण का पहला घटक आकाश है। आकाश का अर्थ है वह रिक्त स्थान जिसमें से होकर हमारा आना और जाना होता है। आकाश ही सभी आकाशीय पिण्डों का आश्रय भी है। मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिए खुले आकाश की अधिक आवश्यकता होती है। रात्रि में सोते समय भी उसे कम से कम 500 घन फुट आकाश चाहिए। विज्ञान के इस युग में कृत्रिम उपगृहों के कारण तथा वायु और ध्वनि प्रदूषण के कारण आकाश भी प्रदूषित हो रहा है। ओजोन परत में छेद हो जाने से सूर्य की परा बेंगनी किरणें पृथ्वी पर पहुंच कर कई रोगों को जन्म दे रही है साथ ही प्रदूषित वायु भी आकाश में पहुंच रही है।

आकाश के बाद वायु का स्थान आता है। प्रत्येक मनुष्य को प्रतिदिन 13.5 कि.ग्रा. शुद्ध वायु की आवश्यकता होती है। वायु के अभाव में जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। वायु ने पृथ्वी को 800 कि.मी. ऊपर तक चारों ओर से घेरा हुआ है। वायु कई गैसों का मिश्रण है, इसमें नाइट्रोजन 79 प्रतिशत, ऑक्सीजन 20 प्रतिशत, शेष 1 प्रतिशत भाग में कार्बन-डाई ऑक्साइड, विरल गैसें, मिट्टी के कण और धुआं आदि है।

हमारे स्वास्थ्य के लिए इन सबका एक निश्चित अनुपात में पाया जाना आवश्यक है। हम श्वास द्वारा जो हवा फेंफड़ों में लेते हैं उनमें से ऑक्सीजन रक्त में मिली हुई अशुद्धियों को जलाकर नष्ट कर देती है। फेफड़ें से शुद्ध रक्त हृदय द्वारा रक्त वाहिनियों के माध्यम से पुन: शरीर में परिभ्रमण हेतु भेज दिया जाता है। नाइट्रोजन ऑक्सीजन के जलाने की क्रिया को नियंत्रित करती रहती है। श्वास निकालते समय हवा में कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा अधिक होने और ऑक्सीजन की मात्रा कम होने से वह पुन: श्वास लेने योग्य नहीं होती है। साथ ही आवागमन के साधनों और कल-कारखानों द्वारा भी कार्बन डाई आक्साईड और कई विषैली गैसें भी वायुमण्डल में मिलकर उसे प्रदूषित कर देती है। इसे शुद्ध करना आवश्यक है। पेड़ पौधे इस कार्य में सहायक होते हैं। सूर्य से प्रकाश में पेड़ पौधे वायु में से कार्बन डाई ऑक्साइड सोख लेते हैं। संश्लेषण क्रिया द्वारा क्लोराफिल की उपस्थिति में कार्बन अपने विकास के लिए रख लेते हैं और ऑक्सीजन को निकाल देते हैं। वास्तव में ये ऑक्सीजन बनाने की फैक्ट्रियां हैं। हमारे शरीर में हड्डियों के निर्माण में नाइट्रोजन चक्र का बड़ा हाथ होता है। वायु एक दूसरे दृष्टिकोण से भी हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। शरीर में रक्त वाहिनियों में बहता हुए रक्त बाहर की ओर प्रति वर्ग इंच पर 15 पौण्ड दबाव डालता है। वायु बाहर से अन्दर की ओर प्रत्येक वर्ग इंच पर इतना ही दबाव डाल कर इसे सन्तुलित कर हमारे शरीर को बनाए रखता है। वेदों में वायु के विषय में बहुत कुछ कह दिया गया है। निम्न ऋचा बताती है कि वायु गैसों का मिश्रण हैं और शरीर को निरोग बनाए रखता है तथा गंदगी को बहा ले जाता है।

द्वा विमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावत:।

दक्षं ते अन्य आ वातु परान्यो वातु यद्रप:।। ऋ. 10.137.2.

प्रत्यक्ष भूत दो हवाएं सागर पर्यन्त और सागर से दूर तक फैली हुई हैं। इनमें से एक तो शरीर को बल देती है और दूसरी अशुद्धि को बहा ले जाती है। वायु सब स्थानों में व्याप्त है एवं सभी प्राणियों का पोषक है।

त्वमिन्द्राभि भूरसि विश्वा जातान्योजसा:।

स विश्वां भुव आभव:।।

ऋ. 10.153.5.

यह वायु सब उत्पन्न हुए प्राणियों का अपने बल से अभिभावित है। वह सब स्थानों पर प्राप्त होता है। वायु का पाचन क्रिया में भी बड़ा भाग होता है।

ये कीलालेन तर्पयन्ति ये घृतेन ये वा वयो मेदसा संसृजन्ति।

ये अद्भिरीशाना मरूतो वर्षयन्ति ते नो मुञ्चन्त्वंहस:।।

अथर्व. 4.27.5.

जो मरूत गण जीवन को अन्न से और जल से तृप्त करते हैं और जो चर्बी से संयुक्त करते हैं और समर्थ वायु गण से प्राणियों को सींचते हैं वे हमें कष्ट से छुड़ावें।

अब हमारा कर्त्तव्य है कि हम वायु को शुद्ध करें। वायु को शुद्ध करने का सबसे अच्छा तरीका यज्ञ है। इस पर डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक संस्कार चन्द्रिका में अच्छा प्रकाश डाला है। हम उसी पर विचार करेंगे। उन्होंने लिखा है- (1) अग्नि में डाला हुआ पदार्थ नष्ट नहीं होता है। अग्नि का कार्य स्थूल पदार्थ को सूक्ष्म में बदल कर फैला देना है। हवन में डाला गया पदार्थ सूक्ष्म कणों में बदल कर अन्तरिक्ष में फैल जाता है। (2) अग्नि में डालने से पदार्थ के गुण बढ़ जाते हैं। साथ ही उनमें गुणात्मक परिवर्तन भी हो जाता है। (3) अग्नि दुर्गन्धित वस्तु को जलाकर नष्ट कर देती है और सुगन्धित वस्तु को जला कर उसकी सुगन्ध को दूर दूर तक फैला देती है। (4) हवन में कस्तूरी, केशर, गुग्गल, अगर, तगर, जायफल, जावित्री, जटामांसी आदि अनेक कीटाणु नाशक पदार्थ डाले जाते हैं। इससे आकाशस्थ रोगाणु मर जाते हैं तथा इनका धुआं मेघों के निचले भाग में धुलकर पानी को शुद्ध बना कर वर्षा भी करा देता है। पर्यावरण का अगला घटक अग्नि है जो हमें सूर्य द्वारा वैसे ही प्राप्त है। हमें धूप से बचकर नहीं रहना है। धूप में विटामिन डी अपने आप मिल जाता है। खुले में रहना सदैव लाभदायक है।

पर्यावरण का अगला घटक जल है। हमारे शरीर का अधिकांश भाग जल का बना हुआ है।

शुद्ध जल हमें लम्बी आयु देता है।

आपो भद्र घृतमिदाप आसन्नग्नी षोमो विभ्रत्यामइत् ता:।

तीव्रो रसो मधुपृचामरंगम आ मा प्राणेन सह वर्चसागमेत्।।

अथर्व. 3.13.5.

जल मंगलमय और जल ही घृत था। वह जल ही मधुरता से भरी जल धाराओं का परिपूर्ण मिलने वाला तीव्र रस मुझको प्राण और बल के साथ आगे ले चले।

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।।

ऋ. 10.9.1.

निश्चय से जल सुखदाता है। वे हमें अन्न प्रदान करें। हमारे लिए ज्ञान का साधन बनें।

आप इद्वा उ भेषजीरापो अमीवचातनी।

आप: सर्वस्य भेषजी स्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के भव्य स्मारक की आधारशिला रखे जाने पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से सभी भारतवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

5 अगस्त 2020 को भारत के यशस्वी प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अयोध्या में मर्यादापुरूषोत्तम श्रीराम के भव्य ऐतिहासिक स्थल का शिलान्यास किया। यह सम्पूर्ण भारत के लिए एक ऐतिहासिक और गर्व करने का अवसर था। इस दिन पूरा देश खुशी से झूम रहा था। लोगों ने इस खुशी में अपने घरों में दीपमालाएं की, घी के दीये जलाए और भगवान राम के प्रति अपनी श्रद्धा को व्यक्त किया। वास्तव में यह दिन भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा। वर्षों की न्यायिक प्रक्रिया के बाद अंतत: सत्य की विजय हुई जिसके प्रतीक मर्यादापुरूषोत्तम श्रीराम माने जाते हैं। इसके लिए कई हिन्दू भाईयों ने अपना बलिदान दिया है, कारसेवकों ने गोलियां खाई है, लोगों ने संघर्ष किया है, परिणामस्वरूप माननीय सुप्रीम कोर्ट के द्वारा ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर हिन्दुओं के पक्ष में निर्णय दिया गया और भव्य श्रीराम मन्दिर बनने का मार्ग प्रशस्त किया। सुप्रीम कोर्ट का निर्णय आने के बाद भी कुछ संकीर्ण मानसिकता के लोगों ने इसका विरोध किया था और आज भी ओवैसी जैसे कुछ लोग शिलान्यास का विरोध कर रहे हैं।

5 अगस्त को जब भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी अयोध्या में श्रीराम मन्दिर का शिलान्यास कर रहे थे तो देश के सभी समुदायों के लोगों ने इसका स्वागत किया और अपनी शुभकामनाएं हिन्दू भाईयों के प्रति व्यक्त की। आर्य समाज ने भी इस भव्य ऐतिहासिक अवसर का स्वागत किया। आर्य समाज के लोगों ने भी इस ऐतिहासिक अवसर की बधाई दी। कुछ लोगों ने अपनी संकीर्ण मानसिकता का परिचय देते हुए इसका विरोध भी किया और कहा कि आर्य समाज मूर्तिपूजा का खण्ड़न करता है फिर श्रीराम मन्दिर के शिलान्यास की बधाई क्यों? ऐसे लोगों से मैं कहना चाहता हूँ कि हाँ यह बात सच है कि आर्य समाज मूर्तिपूजा का विरोध करता है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने मूर्तिपूजा का खण्ड़न किया है। परन्तु इस भव्य मन्दिर का निर्माण केवल मूर्तिपूजा तक सीमित नहीं है। अगर केवल किसी मन्दिर के निर्माण का शिलान्यास होता तो आर्य समाज अवश्य विरोध करता परन्तु यह विदेशी आक्रन्ताओं के द्वारा हमारी संस्कृति पर किया गया आक्रमण था। हमारी संस्कृति के आधारस्तम्भ, आदर्श, मर्यादापुरूषोत्तम के ऐतिहासिक स्थल को तोड़कर मस्जिद का निर्माण किया गया था। यह हमारी अस्मिता पर किया गया प्रहार था जिसके न्याय के हकदार सभी भारतवासी थे। इस भव्य ऐतिहासिक स्मारक का निर्माण उन लोगों के मुंह पर करारा तमाचा है जो आज भी बाबर जैसी तोड़ फोड़ वाली सोच रखते हैं। कुछ लोग यह भी तर्क दे रहे हैं कि मन्दिर के स्थान पर अस्पताल, गुरूकुल, विश्वविद्यालय खोलने से ज्यादा लाभ होगा। उन लोगों के लिए यह सुझाव है कि जो गुरूकुल खुले हुए हैं उनका ज्यादा से ज्यादा सहयोग करो, उन्हें सक्षम बनाओ और अगर नये गुरूकुलों, अस्पतालों, विश्वविद्यालयों का ही निर्माण करना है तो क्या अयोध्या को छोड़कर आपको कोई और स्थान नहीं दिखाई देता। जब इतने वर्षों के बाद यह ऐतिहासिक अवसर आया है उसी समय गुरूकुल, अस्पताल, विश्वविद्यालय की याद क्यों?

श्रीराम मन्दिर जन्मभूमि के शिलान्यास का जो लोग यह कहकर विरोध कर रहे हैं कि आर्य समाज मूर्तिपूजा को नहीं मानता, उसका विरोध करता है। ऐसे लोगों से निवेदन है कि वे आर्य जगत के लौहपुरूष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जीवन चरित्र पढ़े। उनके जीवन की एक घटना है कि जब मालेरकोटला के नबाव ने हिन्दुओं के मन्दिर पर ताले लगवा दिये, रामायण का पाठ बन्द करवा दिया तो वहां के हिन्दू सहायता के लिए दीनानगर में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के पास आये और उनसे सहायता के लिए निवेदन किया। तब स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज उन हिन्दू भाईयों की सहायता के लिए मालेरकोटला गए और नबाव को चेतावनी देते हुए कहा कि मैं मूर्तिपूजक नहीं हूँ परन्तु मूर्तिभञ्जक भी नहीं हूँ। कल तक मन्दिर का ताला खुल जाना चाहिए। स्वामी जी की इस चेतावनी का नबाव के ऊपर असर हुआ और उसने मन्दिर के ताले खुलवा दिये। इसलिए आर्य समाज हमेशा से अपने हिन्दू भाईयों के साथ खड़ा है। आर्य समाज मर्यादापुरूषोत्तम श्रीराम को महापुरूष मानता है। आर्य समाज भले ही उनके चित्र की पूजा न करता हो परन्तु उनके चरित्र की पूजा अवश्य करता है। इसलिए आर्य समाज ने दिल खोलकर इस ऐतिहासिक अवसर का स्वागत किया।

श्रीराम के जीवन की एक-एक घटना त्याग और मर्यादा का संदेश देती है। भगवान राम का जीवन कुछ इस तरह से भारत के जन-जन के हृदय पटल पर अंकित हो गया है कि उसे काल की कोई अवधि मिटा नहीं सकती। इस देश के लोग श्रीराम को मर्यादा पुरूषोत्तम कहते हैं। इसका अर्थ यह है कि वह मनुष्य जो मर्यादा बना सकता है। भगवान राम उसकी अन्तिम सीमा थे। वह पुरूष भी उत्तम थे और उनकी मर्यादाएं भी उत्तम थी। उन्होंने मानव मात्र के लिए मर्यादा पालन का जो आदर्श प्रस्तुत किया था वह संसार के इतिहास में कहीं और नहीं मिल सकता। उदाहरण के लिए उन्होंने अपना पहला आदर्श आज्ञाकारी पुत्र के रूप में प्रस्तुत किया। उनके पिता राजा दशरथ अपनी रानी कैकेयी से वचनबद्ध थे। रानी कैकेयी ने ठीक उस समय जब राम का राज्याभिषेक होने वाला था उसी समय राम को वनवास और अपने पुत्र भरत के लिए राज्यतिलक की माँग कर दी। दशरथ नहीं चाहते थे किन्तु अपने पिता के वचन का पालन करने के लिए भगवान राम ने एक पल में राज-पाठ को त्याग दिया और वनवासी बनकर वनों को चले गए। पूरे चौदह वर्ष उन्होंने वन में बिताए ऐसा आदर्श कौन प्रस्तुत कर सकता है। संसार में जितने भी युद्ध और लडाईयाँ अब तक हुई हैं वह राज प्राप्ति के लिए हुई हैं किन्तु भगवान राम ने जो आदर्श प्रस्तुत किया उसकी तो कल्पना भी नहीं कर सकता।

दूसरा आदर्श उन्होंने एक आदर्श भाई का प्रस्तुत किया। यद्यपि भरत की माता कैकेयी ने उन्हें राज-पाट के बदले वनवास दिलाया था किन्तु श्रीराम ने भरत से न ईर्ष्या की और न द्वेष। वह निरन्तर भरत के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करते रहे और उसे राज-काज सम्भालने की प्रेरणा करते रहे। उन्होंने उसे कभी अपना प्रतिद्वन्दी नहीं समझा। क्या आज के समय में कोई इस प्रकार का आदर्श प्रस्तुत कर सकता है? आज के इस समय में जब जमीन जायदाद के लिए भाई-भाई के खून का प्यासा है। पतन के इस समय में मर्यादा पुरूषोत्तम राम के द्वारा स्थापित आदर्श भ्रातृप्रेम के आदर्श को अपनाकर उनसे प्रेरणा ले सकते हैं।

तीसरा आदर्श उन्होंने आदर्श पति का प्रस्तुत किया। वह चौदह वर्ष वनों में रहे और वनवासी होकर रहे ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया और वनों में रहने वाले ऋषियों-मुनियों की सेवा का व्रत लिया। जो राक्षस ऋषियों के यज्ञ में विघ्न डालते थे उन राक्षसों का संहार किया। इस काल में उन्होंने गृहस्थ की चिन्ता नहीं की अपितु अपनी सम्पूर्ण शक्ति को राक्षसों का संहार करने के लिए लगाया। रावण ने जब उनकी धर्मपत्नी सीता को चुराने का दुस्साहस किया तो श्रीराम ने इस दुष्कृत्य के लिए रावण का सर्वनाश कर दिया। सबसे बड़ी बात यह है कि वह एक आदर्श राजा थे। आज भी लोग राम राज्य की कामना करते हैं। राज्य तो था ही राजा के लिए किन्तु श्रीराम ने राजा का जो आदर्श प्रस्तुत किया उसे आज तक कोई भुला नहीं सकता। आज समस्त संसार राम राज्य की कामना और अभिलाषा रखता है। महात्मा गांधी भी अपने देश में राम राज्य की स्थापना करना चाहते थे। राम राज्य में कोई चोर नहीं था, कोई व्यभिचारी नहीं था, कोई भ्रष्टाचारी नहीं था। किसी प्रकार का कोई कष्ट क्लेश राम राज्य में नहीं था इसीलिए सारी प्रजा सुखी थी।

आज जब भव्य श्रीराम मन्दिर का निर्माण कार्य प्रारम्भ हो चुका है ऐसे समय हमें यह चिन्तन करना है कि हम किस प्रकार देश में आदर्श राम राज्य की स्थापना कर सकते हैं। केवल राम मन्दिर बनने से ही रामराज्य नहीं आ जाएगा, उसके लिए हमें मर्यादा पुरूषोत्तम राम की मर्यादाओं तथा उनके आदर्शों को अपने जीवन में धारण करना है। भगवान राम ने जो आदर्श और भ्रातृप्रेम के उदाहरण प्रस्तुत किए हैं उन आदर्शों को त्याग की भावनाओं को अपनाएं बिना हम राम राज्य की कल्पना भी नहीं की सकते। राम राज्य के लिए हमें उन सभी बुराईयों, कुरीतियों को दूर करना है जो देश की उन्नति में बाधक हैं। अपनी युवा पीढ़ी को संस्कारवान बनाना है। हर भारतवासी का कर्त्तव्य है कि वे रामायण को स्वयं भी पढ़े, अपने बच्चों को भी पढ़ाएं और रामायण की शिक्षाओं को अपने जीवन में धारण करके उन पर चलने का प्रयास भी करें।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

''यज्ञोपवीत गायत्री और शुद्धि का मूल्य''

ले.-डॉ. रामफल सिंह आर्य, C-18 आनन्द बिहार उत्तम नगर नई दिल्ली

वैदिक युग की शिक्षा की पावन एवं श्रेष्ठ परम्परा जिसमें बालक का यज्ञोपवीत या उपनयन संस्कार करके उसे आचार्य के कुल में भेज दिया जाता था और उसकी निरन्तर ऊंचा उठने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती थी। जो धीरे-धीरे क्षीण होती गई और पतन का मार्ग खुलता चला गया। जहां समाज के प्रत्येक वर्ग को शिक्षा पाने का पूर्ण अधिकार था और व्यक्ति इस पावन साधन से श्रेष्ठ से श्रेष्ठतर बनता जाता था, वहीं अब वह मार्ग अवरूद्ध होता चला गया और शिक्षा का क्षेत्र भी संकुचित होता गया। इसका परिणाम धीरे-धीरे जन्माधारित जाति-व्यवस्था ने ले लिया और इसी कारण ऊंच नीच का भेदभाव पनपता गया और एक अति सुदृढ़ समाज खण्ड-खण्ड होकर बिखरने लगा जिसका लाभ विदेशी आक्रान्ताओं ने उठाया। ब्राह्मण वर्ग, जिसे समाज का मुख कहा जाता था वह ऐसी कुरीतियों में जाकर फंस गया कि अन्यों को मार्ग तो क्या दिखाता स्वयं ही अन्धकार में जा गिरा। धीरे-धीरे विदेशी लुटेरे आते गये और दशा दिन प्रतिदिन बिगड़ती चली गई। यद्यपि चन्द्रगुप्त मौर्य के युग में कुछ आशा बंधती दिखाई दी थी परन्तु वह भी कुछ अधिक देर तक न चल सकी। मुगल काल में जो आक्रमण होते रहे उनका उद्देश्य लूट मार ही था परन्तु मुगलों से यहां के लोगों का जो सांस्कृतिक और धार्मिक शोषण होने लगा उसने तो देश की जड़ों को ही खोखला कर डाला। मुसलमानों द्वारा जो मन्दिरों का, शिक्षणालयों का विनाश और लोगों का मत परिवर्तन किया गया वही सबसे अधिक घातक सिद्ध हुआ। यद्यपि कुछ भारतीय राजाओं और वीरों ने उनका सामना भी किया परन्तु आपसी फूट और अन्धविश्वास के कारण उन्हें वांछित सफलता प्राप्त न हो सकी। जो लोग बलात् मुसलमान बना लिये गये थे उनको पुन: अपनी ओर ले आने का मार्ग किसी को भी सूझता नहीं था। पण्डित पुरोहितों को अपनी उदर पूर्ति के अतिरिक्त कुछ भी करना आवश्यक प्रतीत न होता था और उस पर भी छूत छात का इतना भंयकर रोग था कि निम्न जाति के लोगों की छाया भी उच्च वर्ग को पतित कर देती थी। राष्ट्रीय भावना, देशभक्ति जैसी कोई वस्तु शेष ही न रह गई थी। रहती भी कहां से? जब समाज के एक बहुत बड़े वर्ग को, मनुष्य मानने से ही इन्कार कर दिया गया हो।

इस अवस्था में यद्यपि कुछ देशभक्त लोग संघर्षरत रहकर कार्य कर रहे थे परन्तु ब्राह्मण वर्ग (इन्हें पौंगा पंथी कहना अधिक उपयुक्त होगा) की दृष्टि में उनका भी कोई विशेष मूल्य न था। वेदों की बात कौन करें, यहां तो स्वार्थी लोगों द्वारा रचे गये ग्रन्थों के जाल से ही निकलना असम्भव हो रहा था। हम आपके सामने आज ऐसे ही एक वीर पुरुष की विवशता का वर्णन कर रहे हैं जिससे यद्यपि अपने शौर्य, पराक्रम और नीतिबल के आश्रय पर अपना विशाल साम्राज्य स्थापित कर लिया था तथापि ब्राह्मण वर्ग के सामने वह भी विवश खड़ा दिखाई देता है।

जी हां। यह इतना शक्तिशाली था कि यद्यपि इनका जन्म एक साधारण परिवार में ही हुआ था तथापि अपनी माता और गुरु जी के संरक्षण और मार्ग दर्शन से उन्होंने इतिहास में वीरता का जो आदर्श स्थापित किया उसका अन्य उदाहरण देखने में नहीं आता। हमारा संकेत 'पूज्यवर' श्री छत्रपति शिवाजी महाराज की ओर है। इन्होंने अपनी दूरदर्शिता, नीतिवत्ता, अनूठी युद्धशैली, संगठन शक्ति और अद्भुत वीरता के बल पर औरंगजेब जैसे शक्तिशाली शासक को नाकों चने चबा दिये लेकिन कभी उसे सफल न होने दिया। स्वयं औरंगजेब के शब्दों में, ''शिवाजी बड़ा भारी योद्धा था। हिन्दुस्तान के प्राचीन राज्यों को नष्ट करने का मैं सतत उद्योग कर रहा था। उस समय नया राज्य स्थापित करने का महत्कार्य शिवाजी के सिवा किसी दूसरे से न बन पड़ा। उन्नीस वर्ष तक मेरी सेना उसके साथ लड़ती रही तब भी उसके राज्य का नित्य उत्कर्ष ही होता गया।'' उनके प्रबल शत्रु के शब्द ही शिवाजी का परिचय देने के लिये पर्याप्त हैं।

परन्तु आज हम उनके कार्यों और उनकी राज्य व्यवस्था का नहीं अपितु एक ऐसे विषय का वर्णन करने लगे हैं कि जिसका जन-सामान्य को पता नहीं है। जी हां ! यह कार्य है उनके राज्याभिषेक को लेकर। जब वे अपने शुभ-चिन्तकों के सुझाव पर अपने राज्याभिषेक करवाने के लिये उद्यत हुए तो महाराष्ट्र के ब्राह्मणों ने यह प्रश्न उपस्थित किया कि राज्याभिषेक की क्रिया किस प्रकार से की जायेगी। स्मरण रहे कि उस समय शिवाजी की आयु ४६ वर्ष की हो चुकी थी। उनका विवाह हो चुका था और उनके कई पुत्र पुत्रियां भी थे। तब उनके निजि सचिव बाला जी आवाजी राव चिटनीस ने कहा कि केवल महाराष्ट्र के ब्राह्मणों के आश्रित न रह कर भारत के अन्य प्रान्तों के विद्वानों की भी सम्मत्ति ले लेनी चाहिये। उस समय काशी के गागाभट्ट नामक एक ब्राह्मण विश्वेश्वर नामक स्थान में रहते थे। वे वेदों के, दर्शनों के भी विद्वान थे और धर्म सम्बन्धी विषयों में जो कुछ सम्मति देते थे वह सभी को मान्य होती थी। (N.S. Takaha MA कृत शिवाजी का चरित्र पृष्ठ 3500) उन दिनों गागाभट्ट काशी से अपने नगर पैठव में आये हुए थे जो महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में पड़ता है।

विचार यह हुआ कि गागाभट्ट के साथ-साथ पैठव के अन्य पण्डितों को भी बुला लिया जाये। इन पण्डितों को लिवा लाने के लिये श्री बालाजी आवाजी राव, श्री केशवराव पण्डित, श्री भालचन्द्र राव पुरोहित और श्री सोमनाथ राव कात्रेय को भेजा गया। पालकी, घोड़ों और सवारी का समुचित प्रबन्ध करके मार्गव्यय के लिए 12,000/- रु. भी दिये गये। पैठव पहुंचने पर जब इस विषय पर गागाभट्ट से विचार विमर्श हुआ तो उन्होंने यह आपत्ति उठाई कि शिवाजी क्षत्रिय नहीं हैं अपितु मराठा शूद्र हैं अत: उनका यज्ञोपवीत न हो सकेगा और राजतिलक भी जैसे अयोध्या और हस्तिनापुर में होते थे, वैसे न हो सकेगा। तब बालाजी राव ने उन्हें शिवाजी का वंश वृक्ष दिखलाया तब उन्होंने उनका क्षत्रिय होना स्वीकार किया। आश्चर्य है कि जिसने अपनी वीरता के बल पर इतना बड़ा साम्राज्य खड़ा किया और जिसके अधिकार में 220 जिले थे उसे यह पण्डित वर्ग क्षत्रिय स्वीकार करने के लिये भी तैयार न था वंश वृक्ष देखने पर गागाभट्ट ने उन्हें क्षत्रिय स्वीकार किया और अपनी मण्डली के साथ शिवाजी की राजधानी की ओर प्रस्थान किया शिवाजी ने स्वयं सतारा पहुंच कर उनका स्वागत धूमधाम से किया जिस पर 5,000/- रु व्यय किये गये।

अपनी राजधानी रायगढ़ में पहुंच कर शिवाजी ने एक सभा का आयोजन किया जिसमें महाराष्ट्र के पण्डित, मन्त्रीगण और गणमान्य नागरिकों को आमन्त्रित किया। इस सभा में उनके यज्ञोपवीत के बारे में विशेष रूप से चर्चा हुई जिसमें गागाभट्ट की तो स्वीकृति थी परन्तु महाराष्ट्र के ब्राह्मणों ने इसे स्वीकार न किया। हाय! जिनकी ग्रीवाओं की रक्षा के लिये शिवाजी ने अपना पूरा जीवन लगा दिया वे ही उन्हें यज्ञोपवीत का अधिकार न दे सके। केवल इतना ही नहीं अपितु गागाभट्ट को जाति से बहिष्कार करने पर भी उद्यत हो गये। तब उन्हें शुद्ध करने के लिये संस्कार करना निश्चित किया गया। उसके पश्चात् गंगा, गोदावरी, यमुना और समुद्रों का पानी शुभ-चिन्हों के स्वरूप घोड़ों को मृग चर्मों, सोने चांदी के बर्तनों और अनेक कलशों को मंगवाया गया। सब प्रकार का साकल्य एकत्रित करके पण्डितों ने ज्येष्ठ शुक्ल ४, तदनुसार 28 मई 1674 का दिन यज्ञोपवीत के लिये निश्चित किया।

इस अवसर पर भारतवर्ष के समस्त तीर्थों के ब्राह्मणों को भी बुलाया गया। इस प्रकार ग्यारह हजार ब्राह्मण अपने बाल-बच्चों एवं स्त्रियों समेत इस उत्सव में पधारे, तब इनकी संख्या पचास हजार से ऊपर हो गई। ये चार महीने से भी अधिक समय तक रायगढ़ में रुके। इनके हलवा, पूरी, खीर आदि पर 76675,000/- रुपये खर्च हुआ और 9,21,000/- रु. उनके मार्ग व्यय पर खर्च हुए। इसके अतिरिक्त और बहुत सारे महाराष्ट्रीय ब्राह्मण, सरदार, दूसरे राष्यों के प्रतिनिधि, विदेशी व्यापारी, और बहुत सारे दर्शक भी आये जिनके प्रबन्ध में 55,00,000/- रु. का व्यय हुआ।

(क्रमश)

वेदों का डंका

ले.-प्रा. भद्रसेन दर्शनाचार्य शालीमार बाग-होशियारपुर

वेद शब्द विद् धातु से बनता है। विद् धातु सत्ता=होना, विचार, ज्ञान और लाभ अर्थ में है। अत: वेद शब्द का अर्थ है-ज्ञान अर्थात् जिसमें विविध वस्तुओं का ज्ञान है।

१. जिस के अध्ययन से अनेक बातों का ज्ञान होता है।3. जहां जीवन, जगत से जुड़ी बातों पर विचार किया गया है। 4. अत: उस ज्ञान, विचार के अनुकूल आचरण-व्यवहार करने से कार्य सिद्धि का लाभ होता है। इसीलिए सभी भारतीय शास्त्रकार अपने-अपने विषय, क्षेत्र का मूलस्त्रोत वेद को ही मानते हैं। भारतीय परम्परा के अनुसार ईश्वर ने ही वेद का ज्ञान दिया है। प्रभु ने संसार बनाने के बाद मनुष्यों की उत्पत्ति के साथ ही वेद का ज्ञान दिया था। अत: वेद ईश्वरीय ज्ञान है।

आजकल वेद शब्द से ऋग्वेद-यजुर्वेद सामवेद और अथर्ववेद इन चार का ग्रहण होता है। यह रूप यज्ञ प्रक्रिया को प्रमुखता देता है। वैदिक वाङ्मय में भी यज्ञ की प्रधानता है।

संसार और वेद दोनों ईश्वर की रचनायें होने से (तत्तुसमन्वयात् वेदान्त 1,1,3। के आधार पर दोनों में समरूपता, रजक जैसा प्रभाव, सामञ्जस्य होना आवश्यक हो जाता है।

इसके साथ यह विशेष रूप से ध्यान देने वाली बात है, कि वेद सारे संसार के पुस्तकालय की प्राचीनतम पुस्तक है। इस बात को सभी एकमत (सर्वसम्मत रूप से) मानते हैं। इस का सब से बड़ा प्रमाण बाईबिल और कुरान में आया है, कि वचन, शब्द सब से पहले था। केवल और केवल वेद ही अपने-आप को यत्र-तत्र वाक-'वाच:' कहता है। जिस का सीधा सा अर्थ है-वाणी= शब्द, वचन वेद भारतीय साहित्य का मूलस्रोत है तथा भारतीय संस्कृति, धर्म, परम्परा भी वेद से जीवन रस लेकर ही प्रगतिपथ पर आगे बढ़ी हैं।

वैदिक वाङ्मय-वेद से वैदिक शब्द सामने आता है। अत: इस का अर्थ हुआ कि ऐसा साहित्य जो वेद से सम्बन्ध रखता है, वेद से जुड़ा हुआ है और वेद के अर्थों, भावों, रहस्य को समझने के लिये रचा गया। यह दो प्रकार का है। संरक्षण तथा संवर्धन। जैसे कि वेद के संरक्षण की दृष्टि से रचा गया। जिसमें आठ प्रकार के पाठ रूपी और अनुक्रमणी बृहद् देवता प्रभृति ग्रन्थ दूसरा-वेद को समझने-समझाने के लिए जो उपवेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद वेदांग, दर्शन, वेदकाव्य आदि के रूप में विशाल रचना-संसार है। यह सारा साहित्य, विचारों का भण्डार है। यह यहां वैदिक शब्द के अन्तर्गत आ जाता है।

यहां यह विशेष रूप से ध्यातव्य है, कि भारतीय भावना के अनुसार वेद-ईश्वरीय ज्ञान है। तब कह सकते हैं, कि प्राकृतिक पदार्थों की तरह वेद भी सार्व भौमिक सार्वकालिक सार्वजनिकपन को ही उजागर करते है। यतोहि दोनों एक ही रचनाकार परम पिता परमेश्वर की रचनायें हैं।

नि:सन्देह वैदिक साहित्य के रूप में सराहनीय कार्य किया गया है। इन सब के कर्ता सदा सर्वथा अभिनन्दन-वन्दन के योग्य हैं। पुनरपि महर्षि दयानन्द का कार्य सर्वदा स्मरण किया जाएगा। महर्षि ने अपने जीवन काल में वेदों को एक सुसंगत रूप दिया। इस के लिए 'सत्यार्थप्रकाश और ऋग्वेदादि भाष्य-भूमिका परम प्रमाण हैं। आर्यसमाज का तृतीय नियम-'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। परम-धर्म-यह 'सोने पर सुहागा है।'

इस विवेचन की एक मांग है, कि यह परिचय भी सामने आना चाहिए, कि महर्षि दयानन्द वेदों की ओर कैसे प्रवृत्त हुए? तथा जीवनवृत्त किस रूप में घटित हुआ?

1860 से 63 तक ब्रह्मार्षि गुरू विरजानन्द दण्डी से शिक्षा प्राप्त कर जब दयानन्द संन्यासी ने अपने गुरु वर्य से विदा मांगी, तो गुरु ने यत्र-तत्र आर्ष ज्ञान की ज्योति जगाने का संकल्प धारण करा दिया।

इस की योजना बनाने के लिए स्वामी दयानन्द ने प्रथम दो-तीन वर्ष आगरा में रहकर विचारमन्थन किया। कभी-कभी शंका समाधानार्थ गुरू जी के पास मथुरा चले जाते। यदा-कदा समीपवर्ती स्थानों में प्रचार के लिए भी जाते रहे। तदनन्तर पूर्ण रूप से प्रचार कार्य प्रारम्भ किया। अनेक प्रदेशों में वेदप्रचार यात्रा करने के पश्चात् 1877-78 में ड़ेढ़ वर्ष तक तत्कालीन पंजाब के विविध नगरों में पहुंचे। इन नगरों में कई-कई दिन रहते हुए जहां वेद प्रचार किया, वहां आर्य समाजों की भी स्थापना की। यहां अन्य प्रान्तों की अपेक्षा अच्छा प्रभाव पड़ा। अत: महर्षि की प्रेरणा से प्रेरित पंजाब की आर्य समाजों के सदस्य विशेष सक्रिय हो कर कार्य करने लगे।

अक्तूबर 1883 में ऋषि दयानन्द सरस्वती के देहान्त का समाचार जब पंजाब के आर्यों ने सुना, तो वे एकदम संवेदना से भर उठे। इस संवेदनशीलता के कारण लाहौरादि के आर्यों ने महर्षि के विचारों की ओजस्विता को अनुभव करते हुए एक स्थायी स्मारक निर्माण का दृढ़ संकल्प लिया जो उन दिनों की परिस्थिति में वह स्मारक जहां स्थायी हो, वहां वह जनता के प्रतिदिन के जीवन के लिए लाभप्रद, उपयोगी, सार्थक भी हो। पर्याप्त विचार-विमर्श के साथ इस स्मारक को महर्षि दयानन्द के नाम से सयुंक्त करके शिक्षा प्रसार के कार्य को शुभारम्भ किया गया।

दयानन्द वस्तुत: एक विशेष भावनाभरा शब्द है। जो कि एक विशिष्ठ व्यक्ति के ओजस्वी, क्रान्तिकारी विचारों का जहां स्मारक है, वहां जनता के उत्थानार्थ पारस्पारिक सहयोग पूर्वक सदा जन-जन की सेवा में जुटे रहने की अनथक कर्मठता का भी प्रेरक है। यूं तो दयानन्द संन्यासी होते हुए भी एक महान समाजसुधारक, नवजागरण के पुरोधा, वेद व्याख्याता तथा मानव एकता, भारतीय स्वाधीनता के भी वे प्रतिष्ठापक रहे। ब्रह्मार्षि गुरु विरजानन्द दण्डी जी की प्रेरणा पर आर्ष ज्ञान की ज्योति को सर्वत्र जगमगाने का उन्होंने व्रत लिया। तब से लेकर अक्तूबर 1883 तक महर्षि ने विविध क्षेत्रों में विचारक्रान्ति की। ऐसी अलख जगाई। जिस से विशेषत: भारतीयों में आत्मविश्वास और आत्म सम्मान से भरा सांसारिक जीवन जीने की भावना उभरी। इस को स्पष्ट करने के लिए महर्षि की जीवन गाथा को सामने लाना आवश्यक हो जाता है।

महर्षि जीवन गाथा

भारत के गुजरात प्रान्त में एक टंकारा नाम का कस्बा है। वहां 1824 में मूलशंकर नाम का एक बालक उत्पन्न हुआ। उसका 13 वर्ष तक का बालपन दूसरे बच्चों की ही तरह बीता, चौदहवें वर्ष पिता जी ने मूल को कहा-कल शिवरात्रि है, अत: शिवपुराण की कथा सुनने के लिए चलते हैं। मूल पिता जी के साथ वहां गया, कथावाचक ने शिव जी की वीरता की कई घटनायें सुनाई और शिवव्रत रखने की पद्धति तथा महिमा बताई। लौटते समय मूल ने अपने पिता जी से कहा-इस बार मैं भी शिवरात्रि का व्रत रखूंगा।

व्रत वाली रात जब मूल ने चूहों को शिव पर अर्पित मिठाई, फल खाते हुए देखा, तो पिता जी को जगाकर पूछा, शिव जी इनको हटाते क्यों नहीं? पिता जी ने मूल के प्रश्नों का उत्तर देते हुए प्रसंगवश कहा-सच्चे शिव तो कैलाश में रहते हैं। प्रश्नों के उत्तरों से सन्तुष्ट न होकर मूल ने पिता जी से घर जाने की आज्ञा ली और अपने मन में सच्चे शिव के दर्शन की प्रतिज्ञा करते हुए वह घर लौट आया इसके दो वर्ष बाद मूल की बहिन की मृत्यु हो गई, मूल के लिए मौत का यह पहला अनुभव था, अत: गुम-सुम होकर वह सब कुछ देखता भर रह गया। इसके दो वर्ष बाद मूल के चाचा की भी मृत्यु हो गई। चाचा जी मूल से बहुत प्यार करते थे। अत: मूल को तब अनुभव हुआ, कि किसी प्रिय की मृत्यु होने पर क्या स्थिति होती है? अत: मूल बहुत रोया, सब चुप कराते ही रह गए और इस घटना से मूल के मन में वैराग्य पैदा हुआ।

इस के कुछ दिनों बाद मूल ने पिता जी से कहा-मैं संस्कृत का विशेष अध्ययन करने के लिए काशी जाना चाहता हूं। पर समीप की पाठशाला में पढ़ने का निर्णय हुआ और वहां मूल ने पढ़ना शुरु कर दिया। मूल अपनी पढ़ाई के साथ-साथ कभी-कभी एकान्त में गुरु जी के पास आता और पूछता, सच्चे शिव के दर्शन कैसे होते हैं? और कभी पूछता मौत को कैसे जीता जा सकता है? तब गुरु जी ने योगाभ्यास की बात कर टाल दिया, पर यह क्रम जब बार-बार चलने लगा, तो

(शेष पृष्ठ 6 पर)

पृष्ठ 5 का शेष-वेदों का डंका

शिक्षक ने मूल के पिता को कहा- आपका बेटा कुछ अनोखे-अनोखे प्रश्न पूछता है, अत: अभी से इसका प्रबन्ध कर लो।

इस चेतावनी के बाद माता-पिता ने मूल को घर पर वापस बुला लिया और विवाह की तैयारियां शुरु कर दी। मूल ने जब यह नया रूप देखा, तो उसका अपना आपा एक-दम छट-पटा उठा। अत: घर छोड़ने का निश्चय करके एक दिन सायंकाल मूल ने जल का पात्र लिया और चल पड़ा। योग सिखाने वाले गुरु की खोज में मूल पहले शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी और फिर दयानन्द, संन्यासी बना लगातार चौदह वर्ष मैदानों, नदियों, पहाड़ों की खाक छानी और जहां-कहीं पता चला, कि अमुक स्थान पर विशेष विद्वान, साधु, योगी महात्मा रहता है, वहीं विनीत शिष्य बन कर पहुंचा। शास्त्र के नाम पर जिसने जो कुछ पढ़ाया, सो पढ़ा तथा योग के नाम पर जिसने जो सिखाया, सो सीखा। अन्त में दण्डी स्वामी विरजानन्द जी की कुटिया पर मथुरा में पहुंचा। वहां लगभग तीन वर्ष अष्टाध्यायी, महाभाष्य का विशेष रूप से अध्ययन किया।

एक दिन किसी से कुछ लौंग लेकर गुरु चरणों में विदाई लेने के लिए दयानन्द पहुंचे और निवेदन किया, कि अब सच्चे शिव दर्शन की साधना और मृत्यु पर विजय का पथ पकड़ में आया लगता है। अत: मुझे इस पथ का पथिक बनने की आज्ञा दीजिए। यह सुनने ही गुरु विरजानन्द जी ने कहा-मैंने इन लौंगों के लिए तो तुझे नहीं पढ़ाया था, मुझे ऐसी भौतिक चीजों की जरूरत नहीं है। तब दयानन्द ने कहा मेरे पास इन मांगी हुई लौंगों के अतिरिक्त और देने के लिए है ही क्या? तब बड़े विश्वास के साथ गुरु जी ने कहा-दयानन्द तू युवा है, तेरे पास स्वस्थ शरीर है, तू शिक्षित और विचारशील है तथा भावना भरा दिल रखता है। तू आंखें और दिमाग़ रखते हुए भी अपने चारों ओर क्यों नहीं देखता, कि जनता किस प्रकार अन्ध-विश्वास, रूढ़िवाद और अन्धकार में ठोकरें खा रही है? तब दयानन्द जी ने पूछा, गुरुदेव! मेरे लिए फिर क्या आज्ञा है? ब्रह्मर्षि गुरु विरजानन्द जी दण्डी ने अपने हृदय की भावनाओं को उण्डेलते हुए कहा-दयानन्द! आर्षज्ञान के प्रकाश से सभी को सही राह दिखाओ। शिष्य ने बिना कोई प्रश्न किए इस आज्ञा को शिरोधार्य किया और अन्तिम श्वास तक प्राणपन से निभाया।

स्वामी दयानन्द ने पहले सामान्य विचारों के प्रचार के साथ भारत के एक बड़े भूभाग की जनता को समझा और भारतीय साहित्य का गहरा आलोडन किया। बहुत कुछ देखने, पढ़ने, सोचने के बाद ऋषि दयानन्द ने 1875 में आर्य समाज की स्थापना की। जिससे आर्षज्ञान की ज्योति सदा जगमगाती रहे। हां, अब सोमेश की जिज्ञासा सुनिए।

सोमेश-हां, आपने बहुत सुन्दर ढंग से ऋषि जीवन का परिचय दिया है तथा बताया है, कि उन्होंने एक विशेष उद्देश्य से आर्य समाज की स्थापना की है। इस सम्बन्ध में और कोई जिज्ञासा प्रकट हो, अच्छा हो आप पहले यह बतायें, कि आप ऋषि जीवन में क्या अनोखापन अनुभव करते हैं?

प्रा. संसार के इतिहास की यह एक अपूर्व घटना है, कि एक पठित इक्कीस वर्षीय युवक लगातार चौदह वर्ष भटकने के बाद एक गुरु को प्राप्त करता है। वहां विशेष शिक्षा प्राप्त करके जब अपने पूर्व संकल्प को साधने के लिए विदा मांगता है, तो गुरुदेव उसके जीवन का कांटा ही बदल देते हैं। एतदर्थ अपनी योग-साधना को भी गौण करके महर्षि दयानन्द सर्वात्मना जनता जनार्दन को सत्पथ दर्शाने में जुट जाते हैं। आर्षज्ञान की ज्योति को सदा प्रज्वलित रखने के लिए जहां आर्य समाज की स्थापना की, वहां महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश, संस्कार विधि, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, वेदभाष्य आदि बड़े-छोटे बीस ग्रन्थ भी लिखे।

महर्षि दयानन्द ने अपने बीस वर्ष के कार्यकाल में वेद ज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए विशेष प्रयास किया। वाणी तथा लेखनी को माध्यम बना कर जनता को जागृत किया। उन दिनों संस्कृतभाषा तो दूर सामान्य पढ़ाई को भी पढ़ने का सब को अधिकार न था। महर्षि ने वेदभाषा सीखने का अवसर सभी को दिया।

शोक समाचार

स्त्री आर्य समाज साबुन बाजार (श्रद्धानंद बाजार) लुधियाना की सदस्या श्रीमती शुभलता भंडारी धर्मपत्नी श्री वेद प्रकाश भंडारी लुधियाना का दिनांक 31 अगस्त 2020 को कोरोना महामारी से निधन हो गया। उनके निधन से स्त्री आर्य समाज साबुन बाजार लुधियाना की सभी सदस्याएं अति शोक संतप्त हैं। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। स्व. श्रीमती शुभलता भंडारी जी धार्मिक विचारों की महिला थी। आर्य समाज में यज्ञ, सत्संग आदि कार्यक्रमों में बढ़-चढ़ कर भाग लेती थी। श्रीमती शुभलता भंडारी जी के श्रेष्ठ जीवन और उत्तम कर्मों को स्मरण करते हुए आत्मा-परमात्मा तथा जीवन-मृत्यु पर विचार करते हुए स्त्री आर्य समाज साबुन बाजार लुधियाना के सभी सदस्यों ने श्रद्धांजलि अर्पित की। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान देकर शान्ति व सद्गति प्रदान करें एवं शोक संतप्त परिवार को इस दु:ख को सहन करने की धैर्य शक्ति प्रदान करें। **-श्रीमती राजेश शर्मा प्रधाना स्त्री आर्य समाज**

पृष्ठ 8 का शेष-आर्य समाज पुतलीघर अमृतसर में...

ब्रह्म यज्ञ किया जाता है। मुण्डकोपनिषद में कहा गया है कि-नायमात्मा बलहीनेन लभ्य: अर्थात् निबर्लेन्द्रिय ईश्वर को प्राप्त नहीं कर सकते। ईश्वर के गुण स्वभाव को अपने अन्दर लाने एवं उन गुणों के अर्थ की भावना मन में धारण करने से मनुष्य के अन्त:करण में उन गुणों का प्रभाव पड़ता है और क्रमश: वे मानव जीवन से अभिन्न हो जाते हैं।

उन्होंने कहा कि सन्ध्या, स्वाध्याय के अनन्तर देवयज्ञ का विधान है जो सैद्धान्तिक एवं धार्मिक होने के साथ-साथ सामाजिक, सुखशान्ति एवं नियमन का भी प्रेरक है। आध्यात्मिकता के साथ-साथ वैज्ञानिकता से परिपूर्ण इस यज्ञ के विषय में आर्ष ग्रन्थों में कहा गया है कि- अग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्गकाम: अर्थात् स्वर्ग की इच्छा रखने वाला पुरूष अग्निहोत्र करे। इस भौतिक यज्ञ से जलवायु शुद्ध होती है एवं रोगकारक कीटाणुओं का नाश होता है। प्राणशक्ति के संवर्धन के साथ परिमित वृष्टि करने में भी भौतिक यज्ञ अत्यन्त सहायक है। यज्ञ संसार का सर्वश्रेष्ठ कर्म है।

प्रवचन के उपरान्त श्री एम.एम. सीकरी परिवार को सम्मानित किया गया जो निष्ठा से प्रति रविवार साप्ताहिक सत्संग में आते हैं। कोरोना वायरस के कारण समाज का हर वर्ग प्रभावित हुआ है। उद्योगपतियों से लेकर मजदूर वर्ग तक इस महामारी का प्रभाव हुआ है। इस महामारी में श्रमिक वर्ग सबसे अधिक प्रभावित हुआ है। इसलिये मिशन आगाज की ओर से तुलसी के पौधों का वितरण किया गया। इस अवसर पर श्री सुशील लूथरा, श्री महेन्द्र कांत, श्री देवेन्द्र गुप्ता, श्री विजय कुमार, श्री नरेन्द्र कुमार, श्री राहुल धवन, रोहित धवन, अभिषेक धवन, कुमार युवान, कुमार गौतम, श्रीमती रमेश रानी, श्रीमती रंजू, श्रीमती रजनी, श्रीमती मानसी कुमार, अलीषा कुमार, सागर कुमार, प्रणव कुमारी, काजल, श्रीमती पूजा, कुमार नमन एवं कुमारी शिवानी उपस्थित रहे। अन्त में शान्ति पाठ के उपरान्त ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

-मुरारी लाल आर्य महामंत्री

पृष्ठ 8 का शेष-देश को आजाद कराने में...

माताओं को सम्बोधित करते हुये कहा कि राष्ट्रहित सर्वोपरि है अत: राष्ट्र के लिये हमें अपना तन, मन एवं धन समर्पित कर देना चाहिये। उन्होंने कहा कि यदि हमारा देश सुरक्षित है तो हम सभी सुरक्षित हैं। इसलिये हमारे देश की सुरक्षा कर रहे भारतीय सैनिकों को हमें विशेष सम्मान देना चाहिये।

तत्पश्चात धर्मेन्द्र विद्यालंकार ने अपने उद्बोधन में कहा कि देश को स्वतंत्र कराने में आर्य समाज ने विशेष योगदान दिया एवं देश को स्वतंत्र कराने के लिये संघर्ष करने वाले क्रान्तिकारियों में 85 प्रतिशत क्रान्तिकारी आर्य समाजी थे। जिन्होंने अपने देश के लिये अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। उन्होंने कहा कि वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता: अर्थात् हम पुरोहित राष्ट्र को जीवन्त एवं जागृत बनाए रखेंगे।

तत्पश्चात महामंत्री हर्ष लखनपाल ने अपने सुविचारों को व्यक्त करते हुये कहा कि उन सभी क्रान्तिकारियों के प्रति हम सम्मान व्यक्त करते हैं जिन्होंने देश के लिये हंसते हंसते प्राण त्याग दिये। ऐसे उन बलिदानियों को हम शत-शत नमन करते हैं। स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर चौधरी हरी चन्द, सुरेन्द्र अरोडा, संदीप अरोडा, ओम प्रकाश मेहता, पूनम मेहता, विजय चावला, अशोक धीर, सुभाष मेहता, सुभाष आर्य, इन्दु आर्य, सरिता आर्या, जितेन्द्र आर्य, वंश आर्य, स्वर्ण शर्मा, ललित मोहन कालिया, सुनीत भाटिया, डिम्पल भाटिया, हितेश स्याल, सूर्या मिश्रा, राजेश कुमार मल्होत्रा, अनिल मिश्रा, अमित सिंह, ज्योति सिंह, अर्चना मिश्रा, उमा शुक्ला, प्रिया मिश्रा, केवल कृष्ण चोपड़ा, उमेश बत्रा इत्यादि उपस्थित थे।

-रणजीत आर्य प्रधान आर्य समाज

पृष्ठ 2 का शेष-वेद एवं पर्यावरण

ऋ. 10.137.6.

जल निश्चय ही भेषजरूप है। जल रोग को दूर करने वाला है। जल सब प्राणियों की चिकित्सा करें। वेदों में जल की उपयोगिता बताने वाले कई मंत्र है। वहां बताया गया है कि जल ही जीवन है। जल के अभाव में रेगिस्तान के अतिरिक्त कोई अन्य कल्पना करना ही व्यर्थ है। जल भोजन बनाने में, सफाई करने में, कृषि कर्म करने में, विद्युत उत्पन्न करने, वाष्प इंजनों आदि को चलाने में काम आता है। इस विषय में निम्न मंत्र पठनीय है-

आप पृणीत भेषजं वरूथं तन्वे मम।
ज्योक् च सूर्य दृशे।।

ऋ. 10.9.7.

जलीय प्राणी सूर्य को लम्बे समय तक देखने के लिए मेरे शरीर के लिए श्रेष्ठ औषध को पूर्ण करते हैं। पर्यावरण के इस महत्वपूर्ण घटक की स्थिति अब बहुत नाजुक हो गई है। नदी के तट पर बसे महानगरों और शहरों का सम्पूर्ण मल-मूत्र नदी में डाला जा रहा है। कारखानों का विषैला तेजाब युक्त तरल पदार्थ भी नदी में प्रवाहित किया जा रहा है। मृत मानव और पशुओं के शरीर भी नदी में प्रवाहित कर दिये जाते हैं। इससे पानी पीने योग्य नहीं रह जाता है।

जल प्रदूषण को बचाने के लिए शहर का मल-मूत्र और विषैला तरल पदार्थ नदी में नहीं डालकर उसके लिए एक तालाब बना कर उसमें डाला जावे। तरल पदार्थ को संयन्त्रों द्वारा शुद्ध कर नदी में डाला जावे तथा ठोस मल पदार्थ को खाद बनाकर कृषि कर्म में उपयोग किया जावे। जलाशय में नहाते समय कुल्ला व नाक बाहर साफ करें। कपड़े भी पानी लेकर अलग से धोवें और गंदा पानी जलाशय में न जाने दें। कुएं में समय-समय पर लाल दवा डालते रहे और पानी भी निकालते रहे। शुद्ध जल के उपयोग से हम निरोग रहेंगे और शरीर सुन्दर बनेगा।

आपो अस्माकं मातरः शुद्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु।
विश्वꣳहि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरूदिदाभ्यः शुचिरा पूतऽएमि।
दीक्षा तपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवा शग्मां परिदधे भद्रं वर्ण पुष्यन्।। यजु. 4.2.

भावार्थ-मनुष्य को योग्य है कि जो सब सुखों को प्राप्त कराने, प्राणों को धारण कराने तथा माता के समान पालन का हेतु जल है उनसे सब प्रकार पवित्र होकर इनको शोध कर मनुष्यों को नित्य सेवन करना चाहिए, जिससे सुन्दर वर्ण, रोग रहित शरीर को सम्पादन कर निरन्तर प्रयत्न के साथ धर्म का अनुष्ठान कर आनन्द भोगें।

पर्यावरण का चौथा घटक ध्वनि प्रदूषण है। ध्वनि ही हमारे ज्ञानार्जन का साधन तथा विचारों का आदान प्रदान करने वाला है। सभी प्राणियों की ध्वनि में भिन्नता होने से गहन अन्धकार में भी हम पहचान जाते हैं कि कौन प्राणी बोल रहा है। विभिन्न वाद्य यन्त्रों को भी ध्वनि से ही जान लिया जाता है। ध्वनि का जीवन में महत्वपूर्ण भाग है परन्तु वर्तमान में विभिन्न कारखानों, रेलगाड़ियों, बसों, मोटरों, ट्रकों, लाउड स्पीकरों आदि की लगातार तीव्र ध्वनि हमें बहरा बनाने लगी है। हमारी नींद में बाधा डालने लगी है, सिर दर्द और तनाव हमारे साथी बनते जा रहे हैं। ध्वनि की तीव्रता को डेसिबल में नापा जाता है। 20 डेसिबल से अधिक शोर को ध्वनि प्रदूषण कहा जाता है। शहरों में सदैव 40 डेसिबल से अधिक शोर रहता है। इससे बचने के लिए हमें लाउड स्पीकर का कम से कम उपयोग करना चाहिए। रेडियो और टी.वी. की ध्वनि भी उतनी ही रखना चाहिए जितने से हम सुन सकें। सदैव धीमा बोलना चाहिए। बोलना मधुर और शान्त रहे। तेज ध्वनि का उपयोग तो शत्रु को भगाने के लिए युद्ध में नगाड़ों द्वारा करें। ऋ. 10.102 मंत्र संख्या 5 से 10 में ऐसे कृत्रिम सांड का वर्णन है जो अपनी तेज आवाज़ और विषैली गैस से शत्रु को युद्ध के मैदान से भगा देता है।

पर्यावरण का पांचवां घटक है खाद्य प्रदूषण। खाद्य पदार्थो के अभाव में जीवन ही संभव नहीं है। आज कल खाद्य पदार्थों में भी मिलावट की जा रही है। जबकि भोजन द्वारा शरीर को कार्य करने के लिए ऊर्जा प्राप्त होती है। कार्य करने से कोशिकाओं में जो टूट-फूट होती है उसकी मुरम्मत होती है और नई कोशिकाओं का निर्माण भी होता है। भोजन द्वारा शरीर को ताप मिलता है और ताप पर नियंत्रण भी होता है। भोजन द्वारा ही शरीर का विकास भी होता है। अथर्ववेद काण्ड 6 सूक्त 135 तथा ऋग्वेद मण्डल 8 सूक्त 48 के मंत्रों में भोजन की उपयोगिता के विषय में पर्याप्त वर्णन है।

यत् पिबामि सं पिबामि समुद्र इव संपिबः।
प्राणानमुष्य संपाय सं पिबामो अमुं वयम्।।

अथर्व. 6.135.2.

मैं जो कुछ पीता हूँ यथा विधि पीता हूँ। जैसे यथाविधि पीने वाला समुद्र पीकर पचा लेता है। पदार्थ को यथाविधि हम पीवें।

इसी प्रकार अगले मंत्र में खाने के विषय में कहा गया है।

स्वादोरभक्षि वयसः सुमेधाः स्वाध्यो वरिवो वित्तरस्य।
विश्वे यं देवा उत मर्त्यासो मधु ब्रुवन्तो अभि सञ्चरन्ति।।

ऋ. 8.48.1.

मैं अन्न खाऊँ। अन्न कैसा हो? जो स्वादु हो जो सत्कार के योग्य हो जिसको देख कर ही चित्त प्रसन्न हो। जिस अन्न को साधारण तथा श्रेष्ठ व्यक्ति मधुर कहते हुए खाते हैं। हम उस अन्न को खायें। खाने वाले सुमति और बुद्धिमान हों साथ ही उद्योगी और कर्म परायण हों।

वेद में खाद्यान्न में मिलावट करने वाले को दण्ड देने का प्रावधान है।

आमे सुपक्वे शवले विपक्वे यो मा पिशाचो अशने ददम्भ।
तदात्मना प्रजया पिशाचा वियातयन्तामगदोऽयमस्तु।।

अथर्व. 5.29.6.

जिस पिशाच समूह ने कच्चे-अच्छे पक्के विविध प्रकार पके हुए भोजन में मुझे धोखा दिया है। वे पिशाच अपने परिवार सहित विविध प्रकार पीड़ा पावें और यह पुरूष नीरोग रहे। पर्यावरण का छठा घटक मृदा अपमर्दन और वनस्पति क्षरण है।

प्राणी मात्र के लिए मिट्टी और वनस्पति अत्यन्त महत्वपूर्ण है। बड़े-बड़े राजमहल और सामान्य झोंपड़ी भी इसी मिट्टी की माया है। विभिन्न पेड़, पौधे, शाक, झाड़ियां आदि इस मिट्टी से ही उत्पन्न होते हैं। बढ़ती हुई जनसंख्या और मनुष्य की महत्वाकांक्षा ने इस मिट्टी को प्रदूषित कर दिया है। विभिन्न रासायनिक खाद और फसलों के कीड़ों को मारने के लिए जो दवाईयों का छिड़काव किया जा रहा है उसने मिट्टी को विषैला बना दिया है। यह विषैली मिट्टी वर्षा के जल के साथ मिलकर जल को भी विषैला बना रही है। भवन निर्माण हेतु पत्थर पाने के लिए भूमि को बुरी तरह खोदा जा रहा है। पत्थर की खानों के पास मिट्टी और टूटे-फूटे पत्थरों के पहाड़ खड़े हो गए है। अधिक खुदाई के कारण भूकम्प आने लगे हैं।

वेद में पृथ्वी को माता माना गया है। अथर्ववेद काण्ड 12 सूक्त 1 में 64 मंत्र हैं जिनमें पृथ्वी का हृदय ग्राहि वर्णन हुआ है। बारहवें मंत्र में कहा गया है 'माता भूमि पुत्रों अहं पृथिव्या' इसी प्रकार 63वें मंत्र में कहा गया है 'भूमे मातर्नि धेहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम्।' पृथ्वी को खोदे परन्तु उसे नष्ट न कर दें। औषधि भी ऐसे खोदे कि उसकी जड़ नष्ट न होवे।

यत् ते भूमेविखनामि क्षिप्रम तदपि रोहतु।
मा ते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पितम्। अथर्व. 12.1.35.

पर्यावरण का अगला घटक पशु-पक्षी है। वेद में इनके संरक्षण को भी बड़ा महत्व दिया गया है। यजुर्वेद का 24वां अध्याय तो इन्हें ही समर्पित है। परन्तु मनुष्यों ने उनको मार कर खाना शुरु कर रखा है। सौ से भी ज्यादा पक्षियों का तो नाम भी नहीं बचा है इसका भी पर्यावरण पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है।

आर्य समाज पुतलीघर अमृतसर में हवन यज्ञ का आयोजन

आर्य समाज पुतलीघर अमृतसर में दिनांक 9 अगस्त 2020 दिन रविवार को आर्य समाज के प्रांगण में प्रधान श्री इन्द्रजीत जी ठुकराल की अध्यक्षता में वेद प्रचार सप्ताह के उपलक्ष्य में आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के सदस्य हवन यज्ञ करते हुये।

आर्य समाज पुतलीघर अमृतसर में दिनांक 9 अगस्त 2020 दिन रविवार को आर्य समाज के प्रांगण में प्रधान श्री इन्द्रजीत जी ठुकराल की अध्यक्षता में वेद प्रचार सप्ताह के उपलक्ष्य में प्रात: ब्रह्म यज्ञ एवं देव यज्ञ अग्निहोत्र श्री पंडित मुरारी लाल जी आर्य द्वारा सम्पन्न कराया गया। तदोपरान्त श्री प्रेम प्रकाश जी प्रेम, श्री नरेन्द्र पंछी एवं पं. ओम प्रकाश आर्य द्वारा मधुर भजनों से वातावरण संगीतमय हो गया। आर्य समाज तथा वेद धर्म के उपलक्ष्य में पंडित मुरारी लाल जी आर्य ने प्रवचन देते हुये यज्ञ पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यज्ञ क्या है? इसका स्वरूप, उपयोगिता तथा सीमा क्या है? क्या यज्ञ पात्र, यज्ञशाला, हवन सामग्री ही इसके साधन हैं? वस्तुत: तो प्रत्येक श्रेष्ठतम कल्याण कार्य यज्ञ है। यज्ञ शब्द का मौलिक अर्थ यजधातु में है। यज–देवपूजा संगतिकरणार्थ दानेषु अर्थात् जिसमें प्राणीहित, लोकहित एवं सबके प्रति सद्भावना तथा सहृदयता के कार्य सम्पन्न होते हैं वह कर्म श्रेष्ठतम कर्म है। यज्ञ शब्द अनन्तता का सूचक है। स्वयं जीवन भी एक यज्ञ है, इस जीवन यज्ञ को सुनियमित बनाने के लिए ब्रह्मयज्ञ एवं देवयज्ञ दोनों ही अपेक्षित हैं। ब्रह्मयज्ञ चिन्तन में सम्बद्ध हैं। आत्मा को बलवान बनाने के लिए, इन्द्रियों को संयमित एवं सशक्त करना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि सारथि के साथ रथ को सुचारू रूपेण चलाने योग्य। इन्द्रियों को बलवान, यशस्वी एवं पवित्र बनाने के लिए **(शेष पृष्ठ छ: पर)**

आर्य विद्या परिषद पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट अपने निवास स्थान पर परिवार सहित हवन करते हुये। यह हवन पंडित बुद्धदेव विद्यालंकार ने सम्पन्न करवाया। उन्होंने कहा कि इस कोरोना नामक महामारी से मुक्ति के लिए सभी लोगों को अपने-अपने घरों में यज्ञ करना चाहिए। यज्ञ करने से जहां हमारे घर की शुद्धि होती है वहीं पर इसका वातावरण पर भी सुन्दर प्रभाव पड़ता है। यज्ञ की उदात्त भावनाओं से हमें परोपकार करने की प्रेरणा मिलती है। वेद मन्त्रों के उच्चारण से हमारे मन में सकारात्मक विचार आते हैं और नकारात्मकता दूर होती है।

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा घोषित किये गये 12वीं कक्षा के आर्ट्स एवं इंटर आर्ट्स की परीक्षा परिणाम में डब्ल्यू.एल.आर्य सी.सै.स्कूल नवांशहर की छात्राओं ने शानदार प्रदर्शन किया। इंटर आर्ट्स ग्रुप में अमन ने 437 अंक लेकर पहला, इन्द्रप्रीत कौर ने 390 अंक लेकर दूसरा स्थान प्राप्त किये और आर्ट्स ग्रप की अंजलि ने 359 अंक लेकर तीसरा स्थान प्राप्त किया। मेधावी छात्राओं को स्कूल के प्रधान श्री ललित मोहन पाठक, मैनेजर श्री जिया लाल शर्मा व प्रिंसीपल श्रीमती आरती कालिया ने उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दी। प्रिंसीपल श्रीमती आरती कालिया ने सभी अध्यापकों और बच्चों द्वारा की गई कड़ी मेहनत की प्रशंसा की।

देश को आजाद कराने में आर्य समाज की अहम भूमिका

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञवेदी पर यजमान बने आर्य समाज के प्रधान श्री रणजीत आर्य एवं उनकी धर्मपत्नी अनु आर्या एवं आर्य समाज के महामंत्री श्री हर्षलखनपाल एवं उनकी धर्मपत्नी प्रवीण लखनपाल जबकि चित्र दो में ध्वजारोहण करते हुये आर्य समाज के प्रधान।

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। इस यज्ञ के मुख्य यजमान आर्य समाज के प्रधान श्री रणजीत आर्य एवं श्रीमती अनु आर्या एवं आर्य समाज के महामंत्री श्री हर्ष लखनपाल, श्रीमती प्रवीण लखनपाल बने। पुरोहित धर्मेन्द्र विद्यालंकार ने वेद के पवित्र मंत्रों से घृत तथा सामग्री की आहुतियां डलवाई एवं यज्ञ को सम्पन्न करवाया। यज्ञोपरान्त आर्य समाज के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सुरेन्द्र सिंह गुलशन ने देश भक्ति के गीत सुना कर सभी को आनन्द विभोर कर दिया। तदनन्तर प्रधान श्री रणजीत आर्य ने अपने कर-कमलों से तिरंगे को फहराया एवं उपस्थित सज्जनों तथा **(शेष पृष्ठ छ: पर)**

स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक प्रेम भारद्वाज द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड़ जालन्धर पंजाब से मुद्रित एवं गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से प्रकाशित।
सम्पादक-प्रेम भारद्वाज
पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के चयन हेतु उत्तरदायी किसी विवाद का न्यायिक क्षेत्र जालन्धर होगा। आर एन आई संख्या 26281/74 **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**